678

M.A. (Previous) Examination, 2022

हिन्दी साहित्य

Paper-II

(Compulsory Paper)

मध्यकालीन काव्य

Time Allowed : **3 Hours**

Maximum Marks : **100 / 80**

For Non Collegiate – **100**

For Regular – **80**

Note : (1) No supplementary answer-book will be given to any candidate. Hence the candidates should write the answer precisely in the main answer-book only.

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी । अतः परीक्षार्थियों को चाहिये कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें ।

(2) All the parts of one question should be answered at one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer-book.

किसी भी एक प्रश्न के अंतर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें ।

https://www.pdusuonline.com

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : NC – 10 × 4 = 40

Reg. – 8 × 4 = 32

(क) पाती सखि ! मधुबन ते आई ।

ऊधो-हाथ स्याम लिखि पठई, आप सुनो, री माई !

अपने – अपने गृह तें दौरी, लै पाती उर लाई ।

नयनन नीर निरखि नहिं खंडित, प्रेम न बिथा बुझाई ।।

कहा कहौं सूनो यह गोकुल हरि बिनु कछु न सुहाई ।

सूरदास प्रभु कौन चूक तें स्याम सुरति बिसराई ।।

अथवा

ऊधो ! बिरहौ प्रेमु करै ।

ज्यों बिनु पुट पट गहै न रंगहि पुट गहे रसहि परै ।।

जौ आवै घट दहत अनल तनु तौ पुनि अमिय भरै ।

जौ धरि बीज देह अंकुर चिरि तौ सत फरनि फरै ।।

जौ सर सहत सुभट समुंख रन तो रबिरथहिं सरै ।

सूर गोपाल प्रेमपथ-जल तें कोउ न दुखहि डरै ।।

(ख) ऐसी मूढ़ता या मन की

परिहरि राम-भगति-सुरसरिता आस करत ओसकन की ।।

धूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की ।

नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की ।।

ज्यों गच काँच विलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की ।

टूटत अति आतुर अहार-बस, छति बिसारी आनन की ।।

कहँलौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौं गति जन की ।

तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ।।

अथवा

जसु अपजसु देखत नहीं देखत साँवल गात ।

कहा करौं, लालच भरे चपल नैन चलि जात ।।

नख-सिख-रूप भरे खरे, तौ माँगत मुसकानि ।

तजत न लोचन लालची ए ललचौंहीं बानि ।।

https://www.pdusuonline.com

(ग) थकित भयो मन कह्यो न जाई, सहज समाधि रह्या ल्यौ लाई ।।
जे कुछ कहिये सोच विचारा, ज्ञान अगोचर अगम अपारा ।।
साइर बूँद कैसे कर तोलै, आप अबोल कहा कह बोलै ।।
अनल पंखि परे पर दूर, ऐसे राम रह्या भरपूर ।।
अब मन मेरा ऐसे रे भाई, दादू कहबा कहण न जाई ।।

अथवा

सखी ! मेरी नींद नसानी
पिय को पंथ निहारत, सिगरी रैण विहानी
सब सखियन मिलि सीख दयी, मन अेक न मानी
विन देख्यां कल नाहिं परत, जिय ऐसी ठानी
अंग-अंग व्याकुल भयी, मुख पिय-पिय वानी
अंतर वेदन विरह की, वह पीड़ न जानी
ज्यूं चातक घन कूं रटै, महारी जिमि पानी
मीरां व्याकुल विरहणी, सुध-बुध बिसरानी ।

(घ) रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै ।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै ।
एक ही जीव हुतौ सु तौ पार्‌यौ, सुजान, संकोच औ सोच सहारियै ।
रोकि रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै ।।

अथवा

आसा-गुन बाँधि कै भरोसो – सिल धरि छाती
पूरे पन-सिंधु मैं न बूढ़त सकायहौं ।
दुख-दव हिय जारि अंतर उदेग-आँच
रोम-रोम त्रासनि निरंतर तचायहौं ।
लाख-लाख भाँतिन की दुसह दसानि जानि
साहस सहारि सिर आरै लौं चलायहौं ।
ऐसे घनआनँद गही है टेक मन माहि
एरे निरदई तेहि दया उपजायहौं ।

https://www.pdusuonline.com

2. "सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश भ्रमरगीत है जिसमें गोपियों की वचनवक्रता अत्यंत मनोहारिणी है – ऐसा सुंदर उपालंभ काव्य और कहीं नहीं मिलता ।" इस कथन के आलोक में भ्रमरगीत सार की सोदाहरण समीक्षा कीजिए । **NC – 15, Reg.-12**

अथवा

विनय पत्रिका के काव्य सौंदर्य की विवेचना कीजिए । **NC – 15, Reg.-12**

3. मुक्तक काव्य परंपरा की दृष्टि से बिहारी के काव्य का मूल्यांकन कीजिए । **NC – 15, Reg.-12**

अथवा

दादूदयाल की काव्यगत विशेषताओं का विस्तृत विवेचन कीजिए । **NC – 15, Reg.-12**

4. "घनानंद प्रेम की पीर के कवि थे ।" सोदाहरण समझाइए । **NC – 15, Reg.-12**

अथवा

"मीरां ने अपने इष्टदेव कृष्ण की कल्पना पति के रूप में की है ।" इस कथन के आधार पर मीरां की उपासना पद्धति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । **NC – 15, Reg.-12**

5. निम्नांकित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : **NC – 7½ + 7½ = 15, Reg.-6 + 6 = 12**

(i) 'विनय पत्रिका' में अभिव्यक्त तुलसी के दार्शनिक विचार ।

(ii) बिहारी की बहुज्ञता ।

(iii) घनानंद की काव्यकला ।

(iv) मीरां के काव्य में लोक जीवन ।

https://www.pdusuonline.com